झुरिक, स्विटझरलॅण्ड के खुले चर्चा सत्र मे निकम्मे (पंकस्), व्यापारी लोग, पुलिस, निवासी और व्यसनाधीन :

नीचे दिये गये नीले रंग के सेक्शन में आप ऍमी और आरनोल्ड मिंडल की वर्ल्डवर्क थियरी के मुख्य अंश देख सकते हैं। इस विवरण में दिये गए कुछ सिद्धांतो और संकल्पनाओं को वे समझाते हैं। यदि आप पहले से ही वर्ल्डवर्क से परिचित हैं, या फिर आपकी सैद्धान्तिक पहलूओं में रूचि नही है, तो कृपया आप सीधे नीचे दिये गए केस विवरण की शुरवात की ओर जाएँ।

वर्ल्डवर्क थियरी के मुख्य अंश

किसी भी विषय के विवरण को अच्छी तरह से समझने के लिए जिन सिद्धांतों और कार्य प्रणालियों की जरूरत पडती है उनके मुख्य अंश यहाँ दिये गए हैं। सिद्धांतों और संकल्पनाओं की अधिक जानकारी के लिए कृपया प्रस्तावनात्मक लेख ' - , , ' पढें।

वर्ल्डवर्क रूपावली के अनुसार एक संगठन या गुट, विविध स्तरों पर काम करता है, जो कि, समांतर दूनियाँ के तौर पर चलता है। एक स्तर रोजाना की असलियत होती है, जिसमे संगठनात्मक तथ्य, लोग, संरचना ध्येय, नितियाँ और समस्याएँ होती हैं, गुट, एक संगठनात्मक नियम, एक क्षेत्र द्वारा बनता जाता है। विभिन्न ध्रुविताओं और स्थितियों को क्षेत्र, गुट के अंदर वितरीत कर देता है। स्वयंम संगठन के स्तर पर जिन प्रश्नों को "समस्याओं" के तौर पर माना जाता है, वह वास्तव में समुदाय की संतुलन की कोशिश होती है। इनमें से कई स्वयं संतुलन की प्रवृत्तियाँ, ध्रुवियताओं से संबंधित होती है, जहाँ केवल एक पक्ष ही सीधे तौर पर दिखता है, और दूसरा पक्ष, गुट के अंदर स्थानिक तौर पर मौजुद नही होता। उदाहरण के तौर पर, गुट के नेता को कहते हुए सुनिये : "हम ताकतवर और निर्भय हैं और चाहे कुछ हो जाए हम चलते ही रहेंगे" और आप गुट के अंदर ध्रुवीकरण को भाँप सकेंगे, अविश्वासी और संयमी, जिनके लिए इन शब्दों को कहा गया था, एक काल्पनिक विरोधक, जो मानता है कि हम किसी काम के नहीं और हम आगे बढना नही चाहते। फेसिलिटेटर की हैसियत से हम इन स्थितियों में से भूमिकाएँ बना सकते हैं जिससे की उन्हे अच्छी तरह से देखा जा सके और

उनको आपस में मिलने का मौका मिल सके। कल्पना किजिये, मानो एक गुट किसी अनदेखे निर्देशक की कहानी को अंजाम दे रहा हो - कुछ ऐसी बडी गुट मानसिकता जो स्थानिक नही है - वह नाटक खेल रहा हो। जब आप किसी गुट का नेतृत्व करने की कोशिश करते हैं, शायद आपको लगे की एक अदृश्य हाथ आपके विरोध में काम कर रहा है, जबकी, वास्तव में यह स्वयंम संगठन की प्रवृत्ति दूसरी दिशा में खींच रही होती है। भूमिकाओं का, विभाजन किया जा सकता है। सर्वसम्मत वास्तविक भूमिकाएँ (जिन्हे "स वा भूमिकाएँ", या फिर मैं केवल "भूमिका" शब्द का इस्तेमाल करता हुँ) वे स्थितियाँ हैं, जो गुट या संस्कृती की मूख्य मान्यताओं से जुडी होती हैं और उस गुट द्वारा आम तौर पर मानी जाती हैं। गुट के अंदर किसी तीखी प्रतिक्रिया को उत्तेजित किए बिना इन्हे कहा जा सकता है। इसके विरूद्ध आभासी भूमिकाएँ वो बर्ताव हैं, जिन्हे हम आवाज प्रदान नही कर सकते, क्यों कि, उन्हे संगठन की संस्कृति में "मान्यता (Rational)" या उसके बाहर भी जिसे असलीयत कहा जाता है, नही होती। हालाँकि, आभासी भूमिकाएँ व्यक्त नही होतीं, सभी उनकी मौजुदगी महसूस करते हैं और उनसे प्रभावित होते हैं। आभासी भूमिकाएँ गैर इरादतन संपर्क में भी पाई जाती है।

सर्वसम्मत वास्तविक भूमिकाएँ और आभासी भूमिकाएँ एक तरह से आपस में परछाईं का खेल खेलती हैं। एक कठपुतली रंगमंच की कल्पना किजिये, जिस पर दो कठपुतलियों के बीच संवाद चल रहा है, और कठपुतली रंगमंच के पडदे के पीछे, जहाँ रोशनी है, वहाँ आपको तीसरी कठपुतली की आकृति दिखाई देती है। अगली दो कठपुतलीयों के बीच बातचीत चल रही है परन्तु कभी कभी पडदे के पीछे वाली कठपुतली बीच मे ही बोल पडती है। सामने वाली कठपुतलियाँ पडदे के पीछे वाली परछाई कठपुतली के प्रति अनभिज्ञ हैं, और सोचती हैं की शायद सामने दिखने वाली कठपुतली ने ही कुछ कहा। कठपुतली घर में यह एक मजेदार गलत फहमी पैदा करती है। दर्शकों के लिए यह एक मजाक है, पर कठपुतलियों के लिए नही और वास्तव में यह उनके लिए दुखदायी होता है। दुखी कठपुतलियों का स्तर, जो परछाई कठपुतली को देख नही सकते हैं, वह सर्वसम्मत वास्तविकता का स्तर होगा; वह स्तर जो परछाई कठपुतली को सम्मिलित करता है, वह स्वयं-संगठन का स्तर होगा या फिर जिसे हम, स्वप्न स्तर, पुकार सकते हैं।

उपर दिये गये उदाहरण में दर्शक, और ना कि कठपुतलियाँ, नाटक का मजा ले रहे होते हैं, यही गुट प्रक्रियॉओं के लिए भी सही हैं। कई अंत:क्रियाएँ, यदि आप किसी रोल में फंस गए हों तो काफी दर्दनाक हो सकती हैं पर जब आपको एक बार ढाँचे की कल्पना आ जाए, आभासी भूमिकाएँ बात करती हुई, भ्रामकता के पीछे, तो यह शायद आपके चेहरे पर भी मुस्कान खिला दें।

हम इस गतिशीलता के बारे में जानते है। जब हम एक गुट के अंदर असल में क्या चल रहा है, उपर उपर जो कहा जा रहा है, उसके बजाए, तब हम भूमिकाओं और आभासी भूमिकाओं के राज्य मे प्रवेश करते हैं। भूमिकाएँ, सही वाक्य कह रही होती हैं, सही संपर्क के तरीके अपनाती हैं, सही नजरिया रखती हैं, एक संगठन के ढाँचें में चाहे वो जो कुछ भी हों, परन्तु, हम आभासी भूमिकाओं की खुसर फुसर सुन पाते हैं - सांकेतिक तौर पर, गप्पों के रूप में, कुछ बाते जो कही जा रही हैं उनके प्रति किसी भी प्रतिक्रिया को ना दिखा कर।

गुटोंका अपने गैर इरादन संपर्को को या आभासी भूमिकाओं को आवाज प्रदान करने या व्यक्त करने से कतराना इस डर की वजह से है कि इसके परिणाम स्वरूप उभरने वाले संघर्ष सुलझाए नही जा सकेंगें। सर्वसम्मत वास्तविकता के स्तर पर इसमें तथ्य नजर आता है, जहाँ संबंध हमेशा के लिए बिगड सकते हैं, क्यों कि, किसी ने 'सच' बोला। वर्ल्डवर्क की दृष्टिसे यह दुसरी तरह से मायने रखते हैं। भूमिकाएँ और आभासी भूमिकाएँ स्थानीय नही होती, क्यों कि, वे सभी के लिए होती हैं। इसिलिए, आभासी भूमिकाओं की प्रक्रिया का मतलब है कि आप भी उसी व्यक्ति , भूमिका, गुट के समान हैं जिसे आपने सभी दिक्कतों के लिए जिम्मेदार माना था। इसिलिये, यदि कोई व्यक्ति कोई अप्रिय भूमिका अख्तियार करता है तो वह संगठन छोड कर चला जाता है, कोई और उसकी जगह ले लेता है या फिर उसमें से कुछ पहलू। हालाँकि आभासी भूमिकाएँ दूसरे गुटों पर आसानी से व्यक्त हो जाती हैं, वे अपने गुट में भी मौजुद होती हैं, जहाँ वे हाशिये पर चली जाती हैं। आगे आप केस की विस्तृत जानकारी में जान पाएँगे कि कैसे दोनों गुट अपने अपने गुट का बर्ताव दूसरे गुट पर व्यक्त करते हैं।

यह परिवर्तन ही, गुट के अंदर मौजूद इन भूमिकाओं को पूरी तरह से समझने के लिए कई बार भावनात्मक या तीखी प्रतिक्रियाँओं का सहारा लेना पडता है। अपने ही स्वभाव को समझने की प्रक्रिया आसानी से, विवेकपूर्ण और सामान्य स्तर पर, यही स्तर है, जहाँ मान्यताएँ इन विषयों को हाशिये पर छोड देती हैं और गुट को इन्ही के प्रति जागरूक होना होगा। इस प्रतिबिंब प्रक्रिया की वजह से, अधिक जागरूकता ही ऐसा प्रस्ताव है कि हम कैसे दूसरे हैं, किस तरह से हम भी एक हिस्सा हैं और हमे जो बातें परेशान करती है उसमें हमारी भी भागीदारी होती है। अचरज नही कि हम सीधे टकराव से घबराते हैं।

इस जागरूकता की प्रक्रिया को हासिल करना काफी भावनात्मक हो सकता है। यह आम तौर पर तीव्रता और टकराव के दौर से गुजरता है। यदि हम ऐसा कर पाते हैं और उसी समय अपने पूरे अनुभवों का पूरी जागरूकता के साथ पीछा करें, हम आखिरकार पाएँगे की यह भूमिकाएँ पूरी व्यवस्था में मौजूद हैं। पूरी जानकारी या ज्ञान जो भूमिकाओं में मौजूद है, अब, व्यक्त हो जाता है - और इसका सृजनात्मक उपयोग पूरे गुट द्वारा किया जा सकता है। इस नजरिये से, बाधाएँ या समस्याएँ वो संभावनाएँ हैं जो इस्तेमाल किये जाने के लिए मानो चिल्ला रही हों। एक फेसिलिटेटर का काम है भाग लेने वालों के लिए एक महफुज जगह बनाना, और सुनिश्चित करना कि गुट प्रक्रिया के अंत में झगडे सुलझा लिए जाएँ और सब लोगों को प्रस्तुत किए जाने वाले प्रश्नों के नये आयाम समझ में आ जाएँ । भाग लेने वालों और क्लाईंटस का यह केवल हक नही अपितु कर्तव्य भी है कि वे परिणामों के, प्रति साशंक और चिंताग्रस्त हों। फेसिलिटेटरस का यह काम बनता है कि वे इन समस्याओं पर ध्यान दें और इस डर से सावधान रहे और इस बात का ख्याल रखे की सभी की रक्षा हो सके।

समुह की खोज और स्वयं सरलीकरण की प्रवृत्तियों को बल प्रदान करने पर धारणीय सरलीकरण आधारित है । भूमिकाएँ जो वास्तव में पूरी प्रक्रिया का सरलीकरण करती हैं वे गुटों के अंदर ही मौजूद होती हैं, फिर भी, यह भूमिकाएँ गुट द्वारा समझी या अभिव्यक्त नही की जाती। इन भूमिकाओं में से एक उदाहरण है, बढ़प्पन । बढ़प्पन की नींव एक गर्मजोश तटस्थता पर होती है जो जिंदगी को समझती है और लोगों की ओर विकसित होते हुए, खुलते हुए रहस्य के तौर पर देखती है और इसिलिए वह हर इन्सान और प्रवृत्तियों को सहारा और इज्जत देता है और फिर भी किसी को नाराज किए बिना सीमाऐं बाँध लेता है । मनुष्य की कृति में जीवन का अर्थ बसा होता है और भूमिकाएँ जो व्यक्तित्व और प्रकृति अदा करती हैं। यह धारणाएँ शायद व्यक्त ना हों परन्तू इन्हे इन्सान के दिल में महसूस किया जा सकता है। बडा व्यक्ति अपनी मूल मान्यताओं से जुडा रहता है जिसके कारण इस धरती पर एक साथ रहना संभव है। हालाँकि, इन मान्यताओं को दूसरों के उपर थोपा नही जाता, इस प्रकार ढाला जाता है, जिससे की दूसरे लोग भी इससे प्रभावित हो जाते हैं। बढ़प्पन का आयु से कोई संबंध नही होता और प्राय: इसे साधारण लोगों में व्यक्त किया जाता है जैसे नेताओं और फ़ेसिलिटेटरस् में।

पृष्ठभूमि :

स्टॅडलहॉफरप्लात्झ - अंग्रेजी में स्टॅडलहॉफेन स्क्वेअर - झुरिक, स्विटझरलॅण्ड के बीचों बीच खरीददारी की लोकप्रिय जगह है। यह एक चहकता हुआ पार्क है, जिसके चारों ओर रेस्तारां और दूकाने हैं और बाहर की ओर एक रेस्तरां है, जहाँ गर्मियों मे कई लोग बैंचों पर बैठ कर खरीददारी से थोडा विश्राम लेते हैं। बीचों बीच फुलवारी और फव्वारा हैं। नजदीक ही गाडी का स्टेशन हैं जो भारी मात्रा में यात्रियों और पैदल चलने वालों को यहाँ लाता है।

हाल के वर्षों में स्टॅडलहॉफरप्लात्झ, युरोप से आने वाले, पंकस् की, मिलने की जगह बन गया है। वे हाशिये पर रहने वाले और दूसरे गुटों के लोगों से, जैसे, बिना घरों के "अल्किलस् " ,अल्कोहोलिक्स के लिऐ छोटा शब्द, से मिलते हैं और इस चौक के आस पास घूमते हैं और शराब पीते हैं। यहाँ बहुतसे पॉलिटॉक्सिकोमेनिया वाले लोग भी होते हैं - एक लॅटिन शब्द उनके लिऐ जो मन बदलाव के लिऐ दवाओं का सेवन करते हैं, जैसे - हिरोईन, कोकेन, और ऍम्फेटामाईनस् । कई बार परिस्थिति क्षोभक हो जाती है। हाशिये पर जो गुट होते हैं, उनमें झगडे हो जाते हैं, प्राय: उग्र स्वरूप के, या फिर वे अपने पोर्टेबल टेप रिकार्डर पूरी तेजी से बजाते हैं। कई बार पंकस् जोर जबरदस्ती से पैसे मांगते हैं और पास में रहने वालों और यहाँ से गुजरने वालों ने कई बार इसकी शिकायत भी की है, पैसे मांगने की जबरदस्ती से घबराकर, डरावनेसे दिखने वाले पंकस् और उतने ही डरावने उनके कुत्तों के साथ वे पार्क में घुमते रहते हैं। पंकस् ने अपनी तरफ से शिकायत की, कि आने जाने वाले लोग उन्हे कई तरह से अपमानित करते हैं।

एक भव्य सांस्कृतिक नजरिये से, झुरिक, रातों रात कई संस्कृतियों का शहर बन गया है। दस साल पहले तक यह विभिन्नता पडोस के कुछ युरोपिय (ग्रीस, स्पेन, इटली, तुर्की) गुटों तक ही सीमित थी परन्तु झुरिक पूरे विश्व के जातीय गुटों का शहर बन गया है। कई स्विस लोगों के लिऐ यह परिवर्तन मुश्किल रहा। दूसरी ओर, अनगिनत अप्रवासी कहते हैं कि वे जातीयता और संर्कीणता का शिकार बनते हैं। जबकी कुछ लोग संस्कृतियो के बीच की रिश्तेदारी के प्रति अधिक सहनशील होने को कह रहे हैं, दूसरे चाहते हैं कि सरकार और पुलिस को कार्यरत होना चाहिये और हर चीज को "स्वीज पद्धती अनुसार व्यवस्थित" रखना चाहिये।

इस पृष्ठभूमि से, स्टॅडलहॉफेन के घटनास्थल पर विस्फोटक संभावनाए हैं। झुरिक शहर ने पुलिस को सुव्यवस्था रखने के लिऐ भेजा है, परन्तु इसमे अंतर्निहित कठिनाईयाँ हैं। अधिकांश रूप से, किये गये

गुनाहों के प्रति पुलिस अच्छा काम कर रही है, या ऐसे लोगों के साथ, जो सही रूप से जीना चाहते हैं और किसी प्रकार की कोई परेशानी नही चाहते। यद्यपी, पंकस् और हाशिये पर रहने वाले गुट इसमें से किसी भी श्रेणी में नही आते। आम तौर पर वे अपने छोटे मोटे जुर्माने नही दे पाते, क्यों कि, उनके पास पैसे नही होते या ऐसी कोई भी चीज जो उनसे ली जा सके। उस जगह से उन्हे निकालना भी समस्या का हल नही है, वे वापिस फिर आ जाते हैं।

नगर सभा

विस्फोटक परिस्थिती को देखते हुऐ, इन समस्याओं पर काम करने के लिऐ विविध गुटों की मदद के लिये, ल्युकास होलर एस आई पी झूरिक से, झुरिक शहर के सामाजिक विभाग के विशिष्ठ क्रिया दल और मैंने मिल कर एक नगर गोष्ठी का आयोजन किया। मुख्य गुटों के प्रतिनिधियों को ल्युकास ने आश्वस्त कर दिया था - स्थानीय व्यापार संस्थान, पुलिस के मुखिया, नगर प्रशासन और पंकस् - अपनी समस्याओं के बारे में मिल कर काम करने के लिये गोष्ठी में एकत्रित होने का खतरा उठाना। खुली गोष्ठी से दो दिन पहले, ल्युकास और मैंने, अलग से ऐसे सभी गुटों से बातचीत की जो समस्याओं को सुलझाने में दिलचस्पी रखते थे, उनके नजरिये को सुना और इस गोष्ठी के प्रति उनकी हिचकिचाहट के बारे में जाना। हर कोई इस गोष्ठी के नतीजे के प्रति संशय रखता था। हम हमारे प्रयासों से काफी खुश थे जब हमने देखा कि शामियाना, जो सौ लोगों के लिऐ था, वह भर गया था। पुलिस के मुखिया और उनके सहायक, आस पास के कई व्यापारी, शहर परिषद के ७ सदस्यों में से एक, (जो झूरिक के मेयर की हैसीयत से काम करता है), ऐसे लोग, जो घर ना होने की वजह से पार्क में रहते हैं, पंकस् अपने कुत्तों के साथ, नजदीक के हाय स्कुल के विद्यार्थी, पास के घरों में रहने वाले निवासी और ऐसे लोग जिन्हे इसमें दिलचस्पी थी।

शुरू में, विभिन्न सदस्यों ने तीन मिनटों में अपनी भूमिका प्रस्तुत की जिनमे शामिल थे - व्यापारी, पंकस्, पुलिस, नजदीक के हायस्कुल का विद्यार्थी, जिस स्कुल के विद्यार्थी इस पार्क में आते रहते हैं। उनमें से कई प्रातिनिधिक भूमिकाएँ नीचे दी गई हैं।

व्यापार मालिक : हाशिये पर रहने वाले गुट व्यापार के लिऐ अच्छे नही हैं, वे लोगों को डराते हैं, हमारी आमदनी घटी है और हम सोचते हैं की जब लोग यहाँ खरीददारी कर रहे होते हैं तब उनको अपमानित करना ठीक नही। जब हमसे जबरदस्ती भिख मांगी जाती है, तब हमे बुरा लगता है और हमारे नौकर भी डर के मारे काम पर आने से कतराते हैं।

पुलिस : हर कोई हमें बुरा भला कहता है; व्यापारी लोग कहते हैं कि हम बहुत ही ढीले हैं, हाशिये पर रहने वाले गुट, हमें फॅसिस्ट कहते हैं, यदि कुछ हो जाता है, तो मिडिया हमें नियत्रंण खोने के लिऐ दुतकारता है और यदि हम हस्तक्षेप करें तो पुलिस ज्यादतियों के लिऐ हमे दोष दिया जाता है।

पंकस् : हमें कोई भी नही चाहता और हर कोई हमारी अवमानना करता है। हमारी जीवन पद्धती और मान्यताऐँ अलग हैं और हम हमारी तरह से खुले समाज में रहना चाहते हैं। आप हमें आक्रमक कहते हैं; और हम, आम तौर पर किये जाने वाले विज्ञापनों और मुनाफाखोरीवाली जीवन पद्धती को आक्रमक समझते हैं।

हाईस्कुल विद्यर्थी का नजरिया : मैं कामना करता हुँ कि काश हर कोई एक दूसरे के प्रति अधिक सहनशील होता। उम्र में बडे लोग, हमेशा, हम नौजवानों को भला बुरा कहते हैं।

शुरूवात में ही 'असी' एक पंक औरतने बोलना शुरू किया और उसी समय एक दूसरा पंक सभा के कमरे में घुस आया और चिल्ला कर कहने लगा की वह विश्वासघाती है, टैंट में बैठे 'असी' और दूसरे पंकस्, जो और लोगों के साथ बैठ कर कुछ करना चाह रहे थे, उन्हे वह द्रोही कहने लगा और चिल्ला कर कहने लगा की "पंकस् कभी भी समझौता नही करते" और यह कह कर भाग गया। गुट को झटका सा लगा। कुछ कामकाजी व्यापारी लोगों ने 'असी' की समस्या को समझा, परन्तु उनके गुट में कुछ लोग ऐसे भी थे जो गोष्ठी के विरोधी थे, क्यों कि, वे सोचते थे कि ऐसा करने से अल्कीस् और पंकस् को अधिक वैधानिक दर्जा प्राप्त होगा। उन्होने पुलिस और राजनेताओं को लिख कर यह प्रार्थना भी की थी कि यह गोष्ठी न हो। झूरिक नगर ने लेकिन बातचीत के हक में मतदान किया और कहा कि एक अकेला नुस्खा आजकल किसी समाधान को थाम नही सकता। कई नजरियों के बारे में सोचना होगा। अगला प्रस्ताव, झूरिक नगर की ओर से था, जिसमें कहा गया, कि, हम सब को एक दूसरे के साथ जीना सिखना होगा। कानुनी प्रस्तावों पर आधारित समाधान कारगर नही होंगें, यदि बिरादरी में आपसी समस्याओं को सुलझाया न जा सकेगा।

विश्लेषण : यहाँ बहुत सी भूमिकाऐँ और आभासी भूमिकाऐँ हैं। उपरी परत के सबसे नजदीक है वह भूमिका जो कहती है, "दूसरे दल से बात चीत न करें क्यों कि ऐसा करने से तुम्हे तुम्हारी स्थिति छोडनी होगी।" झूरिक नगर ही बडेपन की भूमिका अदा करता है, जो भूमिका प्रणाली को आगे बढाती है।

प्रथम अंत:क्रिया:

भिख मांगने के प्रति गरमा गरम बहस हुई, मुख्य धारा के लोगों ने कहा कि 'नही' कहना कितना मुक्शिल होता है और भिखमंगों की नजर में भीख मांग कर पैसे बनाना और भी मुश्किल होता है। मेरे साथी फॅसिलिटेटर ने कहा कि दोनों ही दल समान जमीन पर हैं। दोनों ने शिकायत की, कि पैसे कमाना कितना मुश्किल है और दोष दूसरे पर मढते रहे। सभी अचंभित रह गये जब दोनों ने इसे मान्यता दी। व्यापारीयों ने ऊँचे किरायों और दूसरे खर्चो की बात कही, पुलिस वालों ने कहा कि उन्हे हमेशा अपने काम के बारे में आलोचना सुननी पडती है, और पंकस् ने बताया कि कैसे कोई भी उन्हे पसंद नही करता और उनकी बेइज्जती करता है।

विश्लेषण : यहाँ जो भूमिका मौजूद नही है, वह है, किसी बडे की, जो सभी शिकायतों को सुन सके। गुट के सभी लोग अपनेआप को शोषित समझते हैं और यह भी समझते हैं कि उनकी समस्याओं की कोई सुनवाई नही हो रही है।

इस चर्चा के दौरान कई विस्मयकारी क्षण आये, और सहज रूप से भूमिकाओं मे घुमाव देखा गया। उदाहरण के तौर पर, व्यापारी लोगों ने कहा कि यह उन्हे बिल्कुल अच्छा नही लगता जब पंकस् हर जगह पेशाब करते रहते हैं। इस बात को पंकस् ने माना और इसके लिये क्षमा भी मांगी और यह भी कहा कि वे आगे से ऐसा करने वालों पर नजर रखेंगें। एक पंकने तो उठकर पार्क में मोबाईल टॉयलेट रखने पर शहर को धन्यवाद भी दिया। परन्तु एक सुझाव भी दिया कि इन टॉयलेटस् की रोजाना सफाई के लिये, किसी का होना जरूरी है, टॉयलेटस् साफ ना होने की शिकायत भी की और इसिलिऐ कई पंकस् खुले में ही शौच आदि कर देते हैं, क्यों कि, यह जगह काफी साफ होती है। मैंने कहा कि सभी स्वीज लोगों की सफाई की ख्वाहिश है, जो गुटों के बीच में या हाशिये पर होने पर निर्भर नही करती और इसे सब लोगों द्वारा समझा गया और सब मिलकर हँसे भी।

जैसे जैसे चर्चा विभिन्न विषयों पर आगे चलती रही, दोनो गुटों के सदस्यों ने टिपण्णी की, कि आपस में बात करने से काफी राहत महसूस हो रही है। फिर एक दूकानदारने वहाँ उपस्थित पंकस् से जानना चाहा कि क्या वे ऐसी स्थिति में हस्तक्षेप के लिऐ आगे आऐँगे, यदि उनमें से कोइ पंक किसी दूकानदार या दूकान पर काम करने वाले किसी व्यक्ति को तंग कर रहा हो। "हाँ", एक पंकने कहा, जो अब तक चूप था "मैं आगे आऊँगा"। अब, जब हम आपस में बात कर रहें हैं और एक दूसरे के साथ इन्सानों की तरह व्यवहार कर रहे हैं, मैं हर चीज के बारे मे अब दूसरी तरह से महसूस कर रहा हुँ। व्यापारी वर्ग में से कुछ लोग यह बात सुन कर प्रभावित लगें। फेसिलिटेटर की मदद से फिर पंकस् ने पुछा : "यदि आप में से कोई हमें नीचा दिखाने की कोशिश कर रहा हो तो क्या आप भी हस्तक्षेप

करेंगे?" व्यापारी लोग कगार पर आ गये। उन्हे सबके सामने "हाँ" नही कहना था। इस हिचकिचाहट से पंकस् को काफी बुरा लगा। वे उत्तेजित होने लगे और एक पंकने तो धमकी दे डाली कि वे वापस फिरसे "फक यु" मोड में चले जाऐँगें। हम फेसिलिटेटरस् ने, जो कुछ हो रहा था, उसकी ओर निर्देश किया और कहा कि यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण है। दोनों गुटों के पास दूसरे गुट की जिंदगी पेचिदा बनाने की शक्ति है। यह ऐसा क्षण था, जिसमें दोनों गुटों को पूरी ताकद लगा कर जूझना था। आपस में एकत्रित होना, किसी कमजोरी या डर की वजह से नही, बल्कि, एक अच्छी रिश्तेदारी की चाहत की वजह से है।

विश्लेषण : हमनें दोनों गुटों की शक्ति और ताकद बयान की। यह एक महत्वपूर्ण क्षण है। शुरूवाती कगार है, वार्तालाप शुरू करने में घबराहट इस डर की वजह से है की कहीं दूसरा गुट हावी ना हो जाए या चालाकी ना कर बैठे। सही चर्चा तभी हो सकती है, यदि, दोनों गुटों को पूरी तरह से यह जानकारी हो की वह दूसरे के लिऐ जिंदगी कितनी मुश्किलोंभरी बना सकता है। आप आत्मविश्वास के स्तर पर एकत्रित होना चाहते हैं और आप चाहते हैं कि आप जो हैं उसके प्रति सम्मानित हों। इस स्थिति से आप दूसरे की बात सुन कर उनसे सहमत भी हो सकते हैं।

जब फेसिलिटेटरने यह स्थिति बयान की तब नजारा ही बदल गया। एक व्यापारी, जो इस क्षेत्र में बडी सी दूकान चलाती थी आगे आयी और उसने कहा "हाँ" वह पंकस् की तरफदारी करते हुए हस्तक्षेप करेंगी। कमरे में सन्नाटा छा गया। "सचमुच, आप ऐसा करेंगी?" एक पंकने इस वार्तालाप से प्रभावित हो कर पुछा ।

विश्लेषण : मौजूद लोगों की स्थानीय बिरादरी बन गई, यह कह कर की, यदि उन पर हमला हुआ तो, वे दूसरे गुट का बचाव करेगें। वे अब मुख्य धारा का भाग नही हैं, क्यों कि वे अब अलग हैं, "हम आपस में बात करते हैं" संस्कृति के सदस्य हैं। यह मुख्य धारा के विरूद्ध है जो केवल "दूसरों" का इस्तेमाल कर काम करते रहते हैं। यही क्षण था, जिसने भविष्य में सतत होने वाले वार्तालापों की नींव रखी। एक स्तर पर, बाहरवाले, जिनके विरूद्ध 'दूसरे' का बचाव किया जा रहा था वह भी गुट की आभासी भूमिका थी। इस दृष्टिकोन से हर तपके का दूसरे से बचाव करने का प्रण गुट के अंदर वार्तालाप जारी रखने की प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता था।

इस वक्त व्यापारियों में से एक सदस्य, जो अब तक खामोश था, उसने कहा कि समय आ गया है, जब इस चर्चा में भाग लेने वालों को 'वो' और 'उनके; शब्दों की जगह 'हम' और 'हमारे' शब्दों का प्रयोग करना चाहिये, चूंकि, हम सभी एक ही जगह का इस्तेमाल कर रहे हैं। सभी ने इस बात पर तालियाँ बजाईं। एक पंक सदस्य ने इसी दिशा में एक सुझाव दिया। जहाँ तक मुझे याद पडता है, उसने कहा,

"हम सभी ने सोचा था कि इसमें से कुछ भी नही निकलेगा।" अब हमें लग रहा है कि दोनों दल कुछ ढीले पड गए हैं और अधिक नजदीक भी आ गए हैं। हम सबकी अपेक्षाओं से यह कहीं अधिक है। शायद समय आ गया है कि युद्ध विराम की घोषणा की जाये और हर कोई अगले तीन महिनों तक कोशिश करके देखे, की, क्या यह चल सकता है? यदि किसी भी दल का व्यक्ति गलती करता है तो उसने सुझाव दिया, कि, "दूसरे दल को, इस गलती का इस्तेमाल, फिर से अपने व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों में पडने के लिऐ नही करना चाहिये, बल्कि, आज रात की भावना को याद रखना चाहिये। तीन महिनों बाद सब को फिरसे मिलना चाहिये और इस दौरान जो कुछ हुआ उसकी समीक्षा करनी चाहिये।"

एक फेसिलिटेटर ने पूछा, कि, यदि कोई इस भावना को भुल जाए तो क्या वे दूसरों को इस बारे में याद दिलाऐगें? कई हाथ खडे किऐ गए।

गोष्ठी संपन्न हुई, सभी दलों ने एक दूसरे को इस गोष्ठी में सम्मिलित होने के लिऐ धन्यवाद दिया और सराहना भी की। शामियाने के अंदर त्योहार जैसा माहौल था। पुलिसवालों के लिऐ भी, जिन्हे पहले क्रूरता भरे व्यवहार के लिऐ कोसा गया था, इस गोष्ठी में शामिल होने पर जोरदार तालियाँ बजाई गईं, शुरूवाती बातचीत के दौरान सामाजिक कार्यकर्ताओं में से एक सदस्य ने उन्हे "फेसिस्ट" कह कर पुकारा था और कहा था कि वे अत्यधिक बल का प्रयोग करते हैं। मुझे याद पडता है, कि, उन्होने कहा, पुलिस का काम काफी मुश्किलों भरा होता है और एक उदाहरण भी पेश किया, जब पुलिस एक व्यक्ति को गिरफ्तार करने लगी, क्यों कि, वह यात्रियों को तंग कर रहा था, वह व्यक्ति एक व्यावसायिक मुक्केबाज था और उसने पुलिस की पीटाई कर दी। दोनो पुलिस अधिकारी जो वहाँ मौजुद थे उन्होने यह माना की जब उन्हे कोई "फॅसिस्ट" कहता है, तो, बहुत बुरा लगता है। पंकस् ने चुप्पी साध ली और सुनने लगे।

समापन टिपण्णी :

ल्युकास को अप्रतिम फॅसिलिटेशन के लिऐ धन्यवाद, गुटों का काम उत्कृष्ट तरीके से करने के लिये और पूरी गोष्ठी के दौरान मजाकिया वातावरण बनाए रखने के लिये धन्यवाद, और एस आई पी दल (सिक्युरीटी - इन्टरव्हेनशन - प्रिव्हेन्शन झूरिक शहर का दल जो समस्याओं को सुलझाता है) उन्हे भी धन्यवाद। झूरिक की पत्रिकाओं ने भी, इस आयोजन कि सराहना, यह कहते हुऐ की, कि यह ब्रेक थ्रु है। ल्युकास ने अपना काम उन गुटों के साथ जारी रखा है जो हर महिने गोल मेज वार्ता के लिये मिलते रहना चाहते हैं। गोल मेज चर्चा २००३ की गर्मियों से जारी हैं और शहरी रहन सहन का एक नया मॉडल पेश कर पायी हैं। यह चर्चा सभी के लिऐ खुली हैं, पुलिस, स्थानीय प्राधिकारी, व्यापारी

संगठन और हाशिये पर रहने वाले गुट, इन में से आम तौर पर एक सदस्य जरूर मौजुद रहता है। स्टॅडलहॉफेनप्लाझ का वातावरण और इसकी समस्याओं के स्तर में काफी सुधार हुआ है। झूरिक शहर के प्रगतिशील प्रशासन को भी धन्यवाद, खास कर मोनिका स्टॉकर को, पूरी परियोजना के खुले पन के लिऐ और प्रोत्साहन के लिऐ।

आपको इस चीज की पहचान कराने हेतु नीचे कुछ तस्वीरें और अखबारों में से कतरने दी गई हैं।

विविध गुटों के भाग लेने वालों के साथ झूरिक की खुली गोष्ठी में

नगर गोष्ठी के बाद 'असी' और मॅक्स : गोष्ठी के दौरान 'असी' ही पंकस् की ओर से महत्वपूर्ण और अधिक बोलने वाली व्यक्ति थी।

विस्तारित एस आई पी गुट जो गोष्ठी के आयोजन के लिऐ जिम्मेदार था, गोष्ठी के बाद एक स्थानीय पब में बातचीत करते हुऐ (बायें से दायें - बिव्लोल्डझिक इब्राहिम, गॅब्रिएला मॅरलिनि दॉस सन्तोस, ल्युकास होहलर, मायकेल हरझिंग, क्रिस्टीएन फिशर और मॅक्स शूपाक)

raum der Band befindet, und entwendeten zwei Keyboards, mehrere Lautsprecherboxen, Mikrofone und eine Akustikgitarre. Die Stadtpolizei hofft nun auf hilfreiche Zeugenaussagen.

«Mode». In insgesamt zehn Fällen wurde Deliktsgut im Wert von über sechs Millionen Franken erbeutet. Die Stadt Zürich wurde in den vergange-

Nicole Fix geht nicht davon aus, dass immer dieselbe Bande am Werk ist. «Diese Methode ist effektiv – deshalb wird sie angewandt.»

Gewerbevertreter und Punks gemeinsam im Konflikt-Zelt am Stadelhofen. Markus Fleischli

Gewerbler und Punks verschafften sich Luft

ZÜRICH – Die Punkszene ist den Geschäftsinhabern am Stadelhoferplatz ein Dorn im Auge. Laut einigen Gewerbevertretern machen Kunden wegen der Punks einen Bogen um den Platz. Um die Situation zu entschärfen, lud gestern die SIP (Sicherheit, Intervention, Prävention) des Sozialdepartements beide Parteien zu einem Forum ins extra dafür aufgebaute Konflikt-Zelt auf dem Stadelhoferplatz ein. Rund 50 Personen, darunter knapp ein Dutzend Punks, verschafften sich Luft und machten Verbesserungsvorschläge.

प्रेस कटिंग : एक स्वीज अखबार में - २० मिनुटेन।